श्री शंकर शिक्षायतन

वैदिक शोध केन्द्र

द्वारा समायोजित

राष्ट्रीय उपनिषद्विमर्श

ईशोपनिषद्विमर्श

(पं. मोतीलाल शास्त्री के आलोक में)

28 जुलाई 2020

<u>प्रतिवेदन</u>

श्री शंकर शिक्षायतन द्वारा दिनांक २८ जुलाई २०२० को संन्ध्या ३ बजे से ८ बजे तक एकदिवसीय बेब आधारित राष्ट्रीय उपनिषद्विमर्श का समायोजन किया गया। इस विमर्श का विषय **ईशोपनिषद्विमर्श** (पण्डित मोतीलाल शास्त्री के आलोक में) था । यह आयोजन गूगल मीट के माध्यम से दो सत्रों में संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ श्री ला. ब. शा. रा. सं. विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के वेद विभाग के आचार्य प्रो. रामानुज उपाध्याय के वैदिक मंगलाचरण से हुआ।

उद्घाटान सत्र के मुख्य वक्ता प्रो. मुरली मनोहर पाठक, अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय ने ईशोपनिषद् के प्रथम मन्त्र की व्याख्या करते हुए अपने वक्तव्य में कहा कि ईश शब्द परमात्मा का वाचक है। उस परमात्मा को आकांक्षा होती है। जिस तत्त्व की आकांक्षा होती है वह जगत् है। यह जगत् षोडशीपुरुषात्मक है। इस उपनिषद् में मुख्यतः पुरुष और प्रकृति का निरूपण है। यह उपनिषद् विश्व का प्रतिपादन करता है। इस प्रकार इन सभी विषयों पर मोतीलाल शास्त्री ने अपने विज्ञानभाष्य में विशद् विवेचन किया है।

बीज वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए प्रो. सन्तोष कुमार शुक्ल, समन्वयक, श्री शंकर शिक्षायतन ने कहा कि ईशावास्योपनिषद् पर पं. मोतीलाल शास्त्री ने दो खण्डों में

कुल ९०० पृष्ठों में विज्ञानभाष्य लिखा है। प्रथम खण्ड को पुरुषात्माधिकरण के नाम से अभिहित करते हुए प्रारंभ के १ से ३ मन्त्रों पर तथा मन्त्र संख्या ४ से १८ तक कुल पन्द्रह मन्त्रों को प्राकृतात्माधिकरण नामक दूसरे भाग में रखते हुए उनपर भाष्य किया है। प्राकृतात्माधिकरण को तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है- ब्रह्म, शुक्र और विश्व। ब्रह्म का प्रतिपादन करने वाले ४ मन्त्र हैं- 'अनेजदेकं....' (मन्त्र ४), "तदेजति....." (मन्त्र ५), 'यस्तु सर्वाणि....." (मन्त्र ६),"यस्मिन् सर्वाणि भूतानि....." (मन्त्र७) । शुक्र का प्रतिपादन करने वाला मन्त्र- 'स पर्यगाच्छुक्र....." (मन्त्र ८) है। मन्त्र संख्या ९ से १८ तक के कुल १० मन्त्र विश्व का प्रतिपादन करते हैं। ईशोपनिषद् के ५ वें मन्त्र पर आदरणीय शास्त्रीजी के मन्तव्य को बतलाते हुए उन्होंने कहा कि-

तदेजति तन्नैजति तद्दूरे तद्वन्तिके।
तदन्तरस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः॥

इस मन्त्र का अर्थ है- वह चलता है वह नहीं चलता है, वह दूर है वह समीप है, वह सब के भीतर है वह सबके बाहर है। विज्ञान की दृष्टि से शास्त्री जी ने इस मन्त्र की व्याख्या करते हुए कहा है कि कृतात्मा का अर्थ विद्वान् और अकृतात्मा का अर्थ सामान्यजन है। कृतात्मा अर्थात् विद्वान् के अनुसार- 'तत् न एजति' वह ब्रह्म चलायमान नहीं है अपितु स्थिर तत्त्व है, 'तत् अन्तिके', वह ब्रह्म पास में है, 'तत् सर्वस्यास्य बाह्यतः' वह ब्रह्म बाहर भीतर सर्वत्र है। इस के ठीक विपरीत अकृतात्मा अर्थात् सामान्यजन के अनुसार- 'तत् एजति' सामान्य जन उस ब्रह्म को गतिमान् समझता है, 'तत् दूरे' ब्रह्म को वह दूर समझता है, 'तत् अन्तरस्य' ब्रह्म को भीतर समझता है। इस प्रकार प्रो. शुक्ल ने पं. शास्त्री जी के भाष्य के आलोक में ईशोपनिषद् के अन्य विषयों पर भी संक्षेप में प्रकाश डालते हुए इस संगोष्ठी की रूपरेखा प्रस्तुत कर उपनिषद्विषयक जर्मनी के विद्वान् शॉपेनहावर के उपनिषद्विषयक विचारों एवं उन विचारों से समग्र यूरोपीय साहित्य एवं समाज कैसे प्रभावित हुआ इसपर भी हमारा ध्यानाकर्षित किया।

उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि प्रो. रमेश चन्द्र पण्डा, पूर्वकुलपति, महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन ने कहा कि यह ईशावास्योपनिषद् शुक्लयजुर्वेद का ४० वां अध्याय है। शुक्लयजुर्वेद में ४० अध्याय हैं जिसमें ३९ अध्याय कर्मकाण्ड का वर्णन करते हैं जबकि ४० वां अध्याय ज्ञानकाण्ड का प्रतिपादन करता है। उपनिषद् का अर्थ ब्रह्मविद्या है। ईशोपनिषद् के मन्त्र के अर्थ को स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा कि ईश्वर के द्वारा व्याप्त यह जगत् है जिसमें विहित कर्म करते हुए त्यागपूर्वक जीवन जीने का वर्णन है। धन का लोभ नहीं करना

चाहिए क्योंकि धन किसी व्यक्ति का नहीं है अपितु ईश्वर का है। इस प्रकार उन्होंने शास्त्री जी के विज्ञानभाष्य में प्रतिपादित अनेक विषयों को नवाचारीय अभिव्यक्ति बतलाकर विज्ञानभाष्य के आलोक में इस उपनिषद् के अध्ययन-अध्यापन को आवश्यक बतलाया।

उद्घाटन सत्र के अध्यक्ष प्रो. सत्यप्रकाश दुबे, पूर्व-आचार्य, संस्कृत विभाग जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर ने कहा कि ब्रह्मसूत्र, उपनिषद् और श्रीमद्भगवद्गीता ये तीनों प्रस्थानत्रयी कहलाती हैं। उपनिषद् ज्ञानकाण्ड होने से एवं वेद का अन्तिम भाग होने से वेदान्त कहलाता है। उपनिषद् में विद्या दो प्रकार की कही गयी है परा और अपरा। परा से उपनिषद् का ही ग्रहण होता है। पं. शास्त्री जी ने ब्राह्मण ग्रन्थों के आधार पर पारिभाषिक शब्दों का विश्लेषण किया है। जैसे ब्रह्म-कर्म, ज्ञान-क्रिया, रस-बल, विद्या-अविद्या। शास्त्री जी ने ईश्वर और जीव के माध्यम से विश्व को व्याख्यायित किया है। मानव शरीर पृथ्वी है, मन चन्द्रमा है, सूर्य बुद्धि है, परमेष्ठी महत् है और स्वयम्भू अव्यक्त है। इस प्रकार ईश्वर जीव में व्याप्त रहता है।

द्वितीय सत्र के विशिष्ट वक्ता डॉ. सतीश के.एस, विभागाध्यक्ष, अद्वैतवेदान्त विभाग, श्री ला. ब. शा. रा. सं. विश्वविद्यालय, नई दिल्ली ने ईशोपनिषद् के आठवे मन्त्र 'स पर्यगाच्छुक्र' पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। इस मन्त्र का अर्थ इस प्रकार है- वह आत्मा सर्वगत, शुद्ध, अशरीरी, अक्षत स्नायु से रहित, निर्मल अपापहत, सर्वद्रष्टा, सर्वज्ञ, सर्वोत्कृष्ट और स्वयम्भू है। उसी ने नित्यसिद्ध संवत्सर नामक प्रजापति के लिए यथायोग्य रीति से अर्थों का विभाग किया है। इस मन्त्र में प्रयुक्त 'शुक्रम्, अकायम्, अव्रणम्, अस्नाविरम्, ये चारों पद नपुंसक लिङ्ग में है। आचार्य शंकर ने इन चारों को पुल्लिंग में करके अर्थ किया है और इस विषय में उनका तर्क है कि 'स' पूर्व में और बाद में कवि, मनीषी पुल्लिंग मे होने से उन चारों का पुल्लिंग होना समुचित है। पं. शास्त्री जी 'शुक्रम् को विशेष्य मानते है और शेष, अकायम्, अव्रणम्, अस्नाविरम् को द्वितीयाविभक्ति कर्म कारक में मानते हैं। षड् ब्रह्म को मारतिश्वा अनेजदेकम् आदि ब्रह्म स्वरूप में शुक्र के द्वारा आहुति देता है। वह मातरिश्वा वायु जगत् का उपादान कारण बनता है। इस प्रकार उन्होंने इस मन्त्र के आलोक में शास्त्रीजी एवं शंकराचार्य के भाष्यविषयक मत पर प्रकाश डालते हुए इस पर विश्लेषण प्रस्तुत किया।

डॉ. विजय शंकर द्विवेदी, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली ने अपना व्याख्यान ईशोपनिषद् के १८ वें मन्त्र पर किया। यह मन्त्र विज्ञानभाष्य के शरीरात्माधिकरण के अन्तर्गत है। उन्होंने इस मन्त्र पर पं. शास्त्रीजी के मन्तव्य को बतलाते हुए कहा कि इस मन्त्र के अनुसार सामान्यजन शरीर को ही सत्य मान कर शारीरिक सुख

को प्राधान मानते हैं। यह शरीर आत्मसंस्था में प्रतिष्ठित रहता है। अमृतात्मा से अनुगृहीत कर्मात्मा (शरीरात्मा) प्रज्ञानात्मा पर, प्रज्ञानात्मा विज्ञानात्मा पर, विज्ञानात्मा महानात्मा पर, महानात्मा अव्यक्त पर प्रतिष्ठित रहता है। यदि इन तत्त्वों पर विचार नहीं करते हैं तो शरीर से अमृतात्मा को निकल जाने पर भस्मान्त शरीर ही शेष रह जाता है। अतः शरीर से ऊपर के तत्त्वों को समझना अत्यन्त आवश्यक है।

जगद्गुरु श्रीदेवनाथ वैदिकविज्ञान एवं अनुसन्धान संस्थान, नागपुर के वैदिक विद्वान् आचार्य श्रेयस् कुर्हेरकर अपने विशिष्ट व्याख्यान में ईशोपनिषद् के प्रथम मन्त्रस्थ चार पादों में ही समस्त उपनिषद् को समाहित करते हुए उनका विज्ञानभाष्य के सन्दर्भ में विश्लेषण प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि ईश शब्द का अर्थ ब्रह्म अर्थात् परमात्मा है। इस उपनिषद् के शान्तिपाठ वाले मन्त्र में पूर्ण का अर्थ ईश से ही है और अन्त में ईश ही पूर्ण रहता है।

डॉ. रञ्जनलता, संस्कृत विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय ने

अपना व्याख्यान ईशोपनिषद् के ८ वें मन्त्र पर स्वामी दयानन्द, पाश्चात्य विद्वान् मैक्स्मूलर, शंकराचार्य और पं. मोतीलाल शास्त्री इन चार भाष्यों के आलोक में दिया। शंकराचार्य का भाष्य आध्यात्मिक, स्वामी दयानन्द का आध्यात्म के साथ साथ व्यावहारिक एवं मैक्स्मूलर का अभिधेयार्थ है। उन्होंने बतलाया कि पं. शास्त्री जी ने ब्रह्म प्रजापति के आठ स्वरूपों का प्रतिपादन किया है। आनन्द, विज्ञान, मन, प्राण और वाक् ये पांच अव्यय के कला हैं; ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र, सोम और अग्नि ये पाँच अक्षर के कला हैं; यही पाचों आत्मक्षर भी हैं; प्राण,आप्, वाक्, अन्नाद और अन्न ये पाँच विकारक्षर हैं; यही पाँचों विश्वसृट् भी है; विकारक्षर ही पञ्चजन हैं; वेद, लोक, प्रजा, वीर्य और पशु ये पाँच पुरञ्जन हैं; स्वयम्भू, परमेष्ठी, सूर्य, पृथ्वी और चन्द्रमा पुर है। मुख्य आठ तत्त्व को पाँच पाँच भागों में विभक्त कर चालीस प्रजापति का स्वरूप बनता है।

द्वितीय सत्र के अध्यक्ष डॉ. दयाल सिंह पवार, व्याकरण विभाग, श्री ला. ब. शा. रा. सं. विश्वविद्यालय, नई दिल्ली ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में देहात्माधिकरण के स्वरूप को प्रतिपादित किया। इस अधिकरण में दो मन्त्र हैं- 'वायुरनिल' और 'अग्ने नय सुपथा राये' । पं. शास्त्री जी वेदान्त शास्त्रों के अध्यारोप के आधार को पुष्ट करते हुए इस अधिकरण का विचार किया है। यह शरीर भस्मान्त है। यह शरीर अनेक सिद्धियों का साधन है न कि शारीरिक सुख का साधन है। आत्मसंस्था का ज्ञान और अमृतात्मा का बोध अत्यन्त आवश्यक है।
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के आचार्य डॉ. रामचन्द्र एवं वेदविज्ञान शोध संस्थान,जयपुर की शोध सहायिका डॉ. श्वेता तिवारी ने भी अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम में उपस्थित अतिथियों और प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए अपने वक्तव्य में श्री शंकर शिक्षायतन के वरिष्ठ शोध अध्येता डॉ. लक्ष्मी कान्त विमल ने श्री शंकर शिक्षायतन की शैक्षणिक गतिविधियों का विवरण देते हुए पं मधुसूदन ओझा के ज्ञान-विज्ञान विषयक परिभाषा को स्पष्टता से प्रस्तुत किया।

धन्यवाद ज्ञापन के क्रम में श्री शंकर शिक्षायतन के वरिष्ठ शोध अध्येता डॉ. मणि शंकर द्विवेदी ने सभी वक्ताओं, अतिथियों एवं प्रतिभागियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन के साथ साथ ईशोपनिषद् के १५ वें मन्त्र 'हिरण्मयेन पात्रेण...' पर पं. मोतीलाल शास्त्री के विज्ञानभाष्य के आलोक में प्रकाश डाला। गूगल मीट के माध्यम से आयोजित इस कार्यक्रम हेतु ऑनलाइन पंजीकरण द्वारा २५० प्रतिभागियों के लिए प्रतिभागिता हेतु स्थान सुनिश्चित किया गया था जिसमें देश के विभिन्न प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थानों के प्राध्यापकों एवं शोधार्थियों ने सक्रिय सहभागिता कर कार्यक्रम को सफल बनाया।

-